❶

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

वर्ष 47, अंक 45 एक प्रति : 5 रुपये

सोमवार 23 सितम्बर, 2024 से रविवार 29 सितम्बर, 2024

विक्रमी सम्वत् 2081 सृष्टि सम्वत् 1960853125

दयानन्दाब्द : 201 पृष्ठ : 8

वार्षिक शुल्क : 250 रुपये दूरभाष: 23360150

ई-मेल : aryasabha@yahoo.com

इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

ज्ञान ज्योति महोत्सव

महासम्पर्क अभियान

महर्षि दयानन्द जी की 200वीं जयंती के अवसर पर न्यूनतम 200 महानुभावों से संपर्क करने का संकल्प लीजिए

अपने मोबाइल में एप्प डाउनलोड करें

200वीं जयन्ती के अवसर पर जे.बी.एम. ग्रुप की एक नई पहल परिवारों तक महर्षि दयानन्द का सन्देश पहुंचाने के लिए

कर्मचारियों को महर्षि दयानन्द प्रतियोगिता कॉमिक वितरण कार्यक्रम का शुभारम्भ

देश-विदेश स्थित जे.बी.एम. के सभी 70 कारखानों के 35000 कर्मचारियों को प्रदान किए जाएंगे कॉमिक्स

दूरदर्शी ऋषि, महान समाज सुधारक, सत्य और समान शिक्षा के पक्षधर थे महर्षि दयानन्द – सुरेन्द्र कुमार आर्य

अन्य व्यवसायी महानुभाव भी प्रेरणा लेकर अपने संस्थानों में इस कार्य को करने का विचार करें

जेबीएम ग्रुप ने महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती के उपलक्ष्य में एक विशेष पहल के तहत कॉमिक बुक्स का वितरण किया। इस कार्यक्रम का शुभारंभ जेबीएम कॉर्पोरेट कार्यालय, गुरुग्राम में माननीय अध्यक्ष श्री एस.के. आर्य जी द्वारा किया गया। इस अवसर पर जेबीएम ग्रुप के वरिष्ठ नेतृत्व, जिनमें राजीव सहदेव, बी.बी. गुप्ता, आनंद स्वरूप, विनय महेश्वरी और अन्य वरिष्ठ अधिकारी शामिल थे, ने भाग लिया। जेबीएम ग्रुप के सभी कॉर्पोरेट कर्मचारियों ने इस कार्यक्रम में उपस्थिति दर्ज कराई।

यह कॉमिक महान समाज सुधारक महर्षि दयानंद सरस्वती की शिक्षाओं और

– *जारी पृष्ठ 5 पर*

200वीं जयन्ती एवं 150वें आर्यसमाज स्थापना वर्ष पर महर्षि दयानन्द सरस्वती कॉमिक प्रतियोगिता में भाग लेकर आपके बच्चे जीत सकते हैं 10 लाख के पुरस्कार

ओ३म्

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयंती पर

ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद अथर्ववेद

आर्यसमाज द्वारा संचालित विभिन्न कार्यों, प्रकल्पों, योजनाओं, गतिविधियों की जानकारी-समीक्षा हेतु

एक दिवसीय विशेष सत्र-पूर्णकालिक बैठक

संगोष्ठी

दिनांक: बुधवार 2 अक्तूबर, 2024

समय: प्रातः 7:30 से सायं 6 बजे

आर्य समाज कैलाश, ग्रेटर कैलाश - 1, नई दिल्ली - 48

सभी साथी प्रातः कालीन नाश्ता, दोपहर का भोजन तथा सायं का अल्पाहार मिलकर करेंगे

कृपया अपनी आर्य समाज एवं महिला आर्य समाज के प्रमुख अधिकारियों के साथ अनिवार्य रूप से पधारना सुनिश्चित करें

निवेदक

धर्मपाल आर्य, प्रधान; विनय आर्य, महामंत्री; विद्यामित्र ठुकराल, कोषाध्यक्ष; सुरेन्द्र कुमार रैली, प्रधान; मनीष भाटिया, कोषाध्यक्ष; आर्य सतीश चड्डा, महामंत्री

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य

ओ३म्

दिल्ली की समस्त आर्य समाजों एवं संस्थाओं की ओर से

महर्षि दयानन्द सरस्वती

200वीं जयंती के विशेष आयोजनों की श्रृंखला में

141 वें

निर्वाण दिवस

की पूर्व संध्या पर भव्य आयोजन

कार्तिक, कृष्ण पक्ष, त्रयोदशी, विक्रमी सम्वत् 2081, तद्नुसार

बुधवार 30 अक्टूबर 2024

समय : अपराह्न 3:30 बजे से सायं 6:30 बजे तक

कार्यक्रम

कार्यक्रम : यज्ञ, भजन, ध्वजारोहण, महर्षि जीवन भव्य नाटिका

स्थान : रामलीला मैदान, अजमेरी गेट, नई दिल्ली-2

निवेदक

सुरेन्द्र कुमार रैली, प्रधान, 9810855695; मनीष भाटिया, कोषाध्यक्ष, 9910341153; आर्य सतीश चड्ढा, महामंत्री, 9313013123

संरक्षक : ठाकुर विक्रम सिंह, सत्यानन्द आर्य, राजेन्द्र दुर्गा

उपप्रधान : उषा किरण आर्य, कीर्ति शर्मा, अरुण प्रकाश वर्मा, अजय सहगल, जोगेन्द्र आर्य, हरिओम बंसल, जगदीश मलिक

मन्त्री : सुरिन्द्र चौधरी, डा. मुकेश आर्य, वीरेन्द्र आर्य, ज्योति ओबेरॉय, सरोज यादव, संजीव आर्य, गजेन्द्र चौहान

व्यवस्था सचिव : संजीव खेत्रपाल

आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य (पं.)

15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

देववाणी-संस्कृत

हे परमेश्वर! मुझे सर्वदा अभय बना दे

वेद-स्वाध्याय

इन्द्र आशाभ्यस्परि सर्वाभ्यो अभयं करत्। जेता शत्रून विचर्षणिः।।
-ऋ॰ 2।41।12; अथर्व॰ 20।57।10
ऋषिः- गृत्समदः ।। देवता-इन्द्रः।। छन्दः- निचृद्गायत्री।।

शब्दार्थ- इन्द्रः =इन्द्र परमेश्वर! मुझे **सर्वाभ्यः आशाभ्यः परि**= सब दिशाओं से **अभय करत्**=अभय कर दे। **शत्रून् जेता**= **जो** परमेश्वर शत्रुओं को जीतनेवाला है, **विचर्षणिः**=और सब-कुछ [प्रत्येक प्राणी के प्रत्येक कर्म को] पूरी तरह देखेनवाला है।

विनय- मैं डरता क्यों हूँ? परमेश्वर (इन्द्र) की इस सृष्टि में रहते हुए तो किसी भी काल में, किसी भी देश में भय का कुछ भी कारण नहीं है। क्या मैं अपने शत्रुओं से डरता हूँ? मेरा तो इस इन्द्र की सृष्टि में कोई शत्रु नहीं होना चाहिए। मेरा कोई शत्रु है ही नहीं। हाँ, एक अर्थ में पाप करने वाले मनुष्यों को शत्रु कहा जा सकता है, क्योंकि पाप करना परमात्मा से शत्रुता करना है- पाप करना ईश्वरीय शासन के प्रति विद्रोह करना है, परन्तु ऐसे पाप करने वाले भाई से भी मुझे डरने की क्या आवश्यकता है? यह ठीक है कि ऐसे पाप करने वाले भाई तब मुझे अपना शत्रु समझ लेंगे जब कभी उनके पाप का विरोध करना मेरा कर्त्तव्य हो जाएगा और तब वे मुझे अपना शत्रु मानकर नाना प्रकार से सताने-कष्ट देने-को भी उद्यत होंगे, परन्तु उस पापी भाई के सताने से भी मेरा क्या बिगड़ेगा? वह तो बेचारा स्वयं परमात्देव का मारा हुआ है। परमात्मा तो स्वभावतः 'शत्रून् जेता' है। उससे शत्रुता करके, अर्थात् पाप करके कौन बचा रह सकता है? यदि यह विश्वास पक्का हो जाए कि परमात्मा 'शत्रून् जेता' है तो अज्ञानी, पापी पुरुषों की ओर से आये हुए बड़े-से बड़े सन्तापों का, घोर-से-घोर अत्याचारों का भी भय हट जाए। ऐसा विचार थोड़ी देर के लिए आने पर ही एकदम निर्भयता आ जाती है और फिर उसे सचमुच 'विचर्षणि' समझ लेने पर तो कोई भय रहता ही नहीं। देखो, वह 'विचर्षणि' परमेश्वर सब प्राणियों के सब कर्मों को ठीक-ठीक देखता हुआ पाप और पुण्य का फल दे रहा है। वह ठीक ढङ्ग से ठीक समय प्रत्येक पाप का विनाश कर रहा है- पाप को परास्त कर रहा है। तब मुझे डरने की क्या आवश्यकता है? मुझे तो कोई दुःख-क्लेश तभी मिलेगा जब मेरा ही कोई पापकर्म उदय होगा, नहीं तो किसी अन्य मनुष्य की चाहना से मुझे क्लेश कभी नहीं हो सकता और यदि मेरे अपने ही पाप-कर्मों के कारण कोई क्लेश आता है तो वह तो आना ही चाहिए। उसे मैं प्रसन्नता से सह-सहकर निष्पाप और अनृण होता जाऊँगा। वह क्लेश उस 'शत्रु' का भेजा हुआ नहीं है, किन्तु मेरे प्यारे परमेश्वर का भेजा है, उसका तो मुझे स्वागत करना चाहिए। एवं, इस संसार में-चारों दिशाओं में, मेरा अब कोई दुःख दे सकने वाला शत्रु नहीं रहा है। जब से प्रभु को 'विचर्षणि' और 'शत्रून् जेता' जान लिया है, तब से मैं अभय हो गया हूँ- सब ओर से अभय हो गया हूँ-किसी दिशा से कोई भय नहीं। अभय, अभय!

-:साभार:-
वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

दिल्ली के बाद बेंगलुरु में दरिंदगी की पराकाष्ठा

श्रद्धा वालकर के बाद अब महालक्ष्मी बनी शिकार

एक और श्रद्धा वालकर, एक और आफताब पूनावाला। ऐसी खबरें आती रहेंगी और श्रद्धा के बाद कोई महालक्ष्मी शिकार बनती रहेगी। बेंगलुरु से जो खबर आई है, उसे व्यक्त करने के लिए हमारे पास शब्द नहीं हैं, सिर्फ उसका किस्सा है और किस्सा सुनकर शायद आपके अंदर शब्द आ जाएं।

बेंगलुरु का व्यालीकवल इलाका, इस इलाके के सिक्स्थ क्रॉस पाइप लाइन रोड में मौजूद एक तीन मंजिला बिल्डिंग का कमरा, कमरे के अंदर 165 लीटर मॉडल का सिंगल डोर फ्रिज। जैसे ही यह फ्रिज खुलता है, हर कोई भाग खड़ा होता है। क्योंकि उसमें करीब 40 से 50 टुकड़ों में रखी थी एक लाश। मंजर इतना खौफनाक था कि खुद बेंगलुरु पुलिस को याद नहीं कि उन्होंने इससे पहले कभी इतना खौफनाक या दहला देने वाला क्राइम सीन देखा था। पुलिस और फॉरेंसिक टीम की इतनी हिम्मत नहीं हुई कि उस लाश को समेट पाए। बेंगलुरु की फॉरेंसिक टीम को भी उसे समेटने के लिए सरकारी अस्पताल के मेडिकल स्टाफ को बुलाना पड़ा।

टुकड़ों में कटी हुई ये लाश थी महालक्ष्मी की और जिसने इसे इस तरह टुकड़ों में विभाजित किया, शक की सुई घूम रही है उसके प्रेमी असरफ के ऊपर। लेकिन यहां पूरा मामला जान लेना बेहद जरूरी है। आखिर दिल्ली की श्रद्धा वालकर के बाद बैंगलूरू की महालक्ष्मी कैसे टुकड़ों में काटी गई ।

जिस कमरे में महालक्ष्मी की लाश मिली, वो कमरा 19 दिन बाद खोला गया था। बीते शनिवार यानी 21 सितंबर को दोपहर करीब साढ़े तीन बजे खुला। इस बिल्डिंग के फर्स्ट फ्लोर पर पांच महीने पहले ही महालक्ष्मी नाम की एक नई किरायेदार आई थी। मूलरूप से नेपाल की रहने वाली महालक्ष्मी यहां अकेली रहती थी। आस-पास में न तो किसी से नमस्ते, न हेलो-हाय, यानी पड़ोसी भी उसे उतना ही जानते थे कि बस पड़ोस में एक नई किरायेदार है। हर रोज वो सुबह साढ़े नौ बजे घर से निकलती और रात साढ़े दस के बाद ही घर लौटती। इसी महीने के 2 सितंबर को अचानक महालक्ष्मी का फोन बंद हो जाता है। उसकी मां और बहन, जो इसी बेंगलुरु में रहती हैं, वो लगातार फोन करते हैं, पर बात ही नहीं होती।

ऐसा चलते-चलते 18 दिन बीत जाते हैं। पिछली 20 तारीख को कुछ पड़ोसी बिल्डिंग के मालिक को शिकायत करते हैं कि बंद पड़े महालक्ष्मी के कमरे के अंदर से अजीब सी बदबू आ रही है। बिल्डिंग के मालिक ने पहले महालक्ष्मी का फोन मिलाया, वो बंद आया, फिर डोर बेल बजाई , कोई रिस्पॉन्स नहीं मिला। अंत में बिल्डिंग का मालिक रेंट एग्रीमेंट देखता है तो उस पर इमरजेंसी कॉन्टैक्ट के तौर पर महालक्ष्मी की मां और बहन का पता और फोन नंबर मिलता है।

मकान मालिक महालक्ष्मी की मां को फोन करता है और उन्हें महालक्ष्मी के घर से आ रही बदबू के बारे में जानकारी देता है। उसकी मां कहती है कि हमारी तो बीते 19 दिनों से वैसे ही महालक्ष्मी से बात नहीं हुई , लेकिन मकान मालिक की बात सुनकर वो घबरा जाती है। महालक्ष्मी के घर की एक चाबी मां के पास रहती थी। वो फौरन चाबी लेकर अपनी दूसरी बेटी के साथ वहां पहुंच जाती है। मकान मालिक और पड़ोसियों की मौजूदगी में घर का दरवाजा खोला जाता है। लेकिन दरवाजा खुलते ही अंदर से इतनी तेज बदबू आती है कि सभी पीछे भाग जाते हैं। भयंकर बदबू आने के

बेंगलुरु का व्यालीकवल इलाका, इस इलाके के सिक्स्थ क्रॉस पाइप लाइन रोड में मौजूद एक तीन मंजिला बिल्डिंग का कमरा, कमरे के अंदर 165 लीटर मॉडल का सिंगल डोर फ्रिज। जैसे ही यह फ्रिज खुलता है, हर कोई भाग खड़ा होता है। क्योंकि उसमें करीब 40 से 50 टुकड़ों में रखी थी एक लाश। मंजर इतना खौफनाक था कि खुद बेंगलुरु पुलिस को याद नहीं कि उन्होंने इससे पहले कभी इतना खौफनाक या दहला देने वाला क्राइम सीन देखा था। पुलिस और फॉरेंसिक टीम की इतनी हिम्मत नहीं हुई कि उस लाश को समेट पाए। बेंगलुरु की फॉरेंसिक टीम को भी उसे समेटने के लिए सरकारी अस्पताल के मेडिकल स्टाफ को बुलाना पड़ा।

टुकड़ों में कटी हुई ये लाश थी महालक्ष्मी की और जिसने इसे इस तरह टुकड़ों में विभाजित किया, शक की सुई घूम रही है उसके प्रेमी असरफ के ऊपर। लेकिन यहां पूरा मामला जान लेना बेहद जरूरी है। आखिर दिल्ली की श्रद्धा वालकर के बाद बैंगलूरू की महालक्ष्मी कैसे टुकड़ों में काटी गई ।

बाद भी कुछ देर बाद हिम्मत कर फिर से वो अंदर जाते हैं। फर्श पर हर तरफ खून के निशान थे। मांस के छोटे-छोटे लोथड़े पड़े थे और खून की एक सूखी हुई लकीर कमरे में रखे फ्रिज तक जा रही थी।

मुंह पर रुमाल रखकर कुछ लोग जैसे ही फ्रिज का दरवाजा खोलते हैं, सबकी चीखें निकल जाती हैं और कमरे से बाहर की तरफ भागने लगते हैं। मकान का मालिक समझ जाता है कि कुछ बड़ी अनहोनी हुई है, वो पुलिस को फोन करता है।

जल्द से जल्द पुलिस भी मौके पर पहुंच जाती है, पर जैसे ही पुलिस कमरे में जाती है, बदबू इतनी तेज होती है कि उनसे रुका नहीं जाता। पुलिस टीम भी बाहर निकल आती है। फिर डबल मास्क के साथ फिर से पुलिस कमरे में जाती है। फ्रिज का दरवाजा खोलती है। फ्रिज के सबसे ऊपरी खाने में दो इंसानी पैर रखे थे। बीच के खाने में इंसानी जिस्म के अलग-अलग हिस्से और सबसे निचले खाने में एक धड़ से

शेष पृष्ठ 7 पर

बाल बोध

ऊपर उठो, आगे बढ़ो-उन्नति का वैदिक सन्देश

ईश्वर की अमृतवाणी वेद के अनुसार मनुष्य का जीवन ऊंचे उठने और आगे बढ़ने के लिए हुआ है, किंतु जैसे बच्चे झूला झूलते हुए जब फिसलकर नीचे आते हैं तब उन्हें अधिक प्रसन्नता का अनुभव होता है। बच्चे तो बच्चे हैं लेकिन अधिकांश लोग जीवन की यात्रा में भी आगे बढ़ने और ऊंचा उठने के बजाय नीचे की ओर लुढ़कने को ही उन्नति प्रगति और सफलता मानते हैं। इसलिए यहां प्रस्तुत है हर आयु वर्ग के लिए उन्नति का वैदिक संदेश

मनुष्य विचारशील प्राणी है। अत: प्रत्येक व्यक्ति आगे बढ़ने का विचार करता है, ऊंचा उठने की इच्छा रखता है। सफलता की कामना सबकी होती है। क्योंकि यह मानवजाति का निजी स्वभाव है। इसलिए मनुष्य ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ कृति कहलाता है। मनुष्य को छोड़कर किसी अन्य योनि के पास इस तरह की विशेषता नहीं है कि वह अपने उत्थान के विषय मे विचार और प्रयास कर सके। केवल मनुष्य को ही परमात्मा का यह वरदान प्राप्त है कि वह उचित अनुचित का भेद समझकर, सही दिशा का चयन करें, उन्नति, प्रगति और सफलता के मार्ग पर आगे बढ़े। दुनिया में जिन लोगों ने सफलता के परचम लहराने का प्रेरक कार्य किया उनकी अनेक अन्य विशेषताओं में यह सबसे बड़ी बात थी कि वे विचार करके निर्णय लेते थे, उनका रिमोर्ट कंट्रोल उनके अपने हाथ में था, वे दूसरों के इशारों पर नाचने वाले नहीं थे, वे अपने कार्यों के विषय में स्वयं निर्णय लेते थे। वे उचित अनुचित को पहले विचारते थे। उनकी योजना इतनी जबरदस्त होती थी कि उसमें असफलता का कोई कारण शेष नहीं बचता था।

आपने यह अक्सर देखा होगा कि मनुष्य अपनी उन्नति की राह में आए अवरोध को दूर करने के लिए अपने रहन-सहन, आहार, व्यवहार, व्यवस्था में परिवर्तन करता रहता है, इसके लिए बहुत से लोग हड़ताल, आंदोलन भी करते हैं कि उनके विचार के अनुरूप जब कोई व्यवस्था उन्हें ठीक नहीं लगती, तो वे उसका पूरी ताकत से विरोध करते हैं लेकिन क्या कभी किसी शेर को या किसी अन्य जानवर को, पशु पक्षी को किसी तरह के परिवर्तन को पसंद न पसन्द करते देखा है, नहीं। क्योंकि उनके भीतर विचारशीलता नहीं होती, उनकी अपनी कोई मंजिल या लक्ष्य नहीं होता, वे सब कोल्हू के बैल की तरह केवल गोल-गोल घूमते हैं।

किंतु मनुष्य लगातार अपनी उन्नति के लिए सजग रहता है, ये मनुष्य का वास्तविक स्वभाव है। यह अलग बात है कि बहुत से मनुष्य अपने स्वभाव को भुलाकर विपरीत आचरण और व्यवहार करने लगते हैं इसलिए अथर्ववेद में एक मंत्र आता है जिसका भावार्थ यह है कि हे मनुष्य तू अपना स्वयं निरीक्षण कर कहीं तेरे भीतर पशुओं की प्रवत्ति यो नहीं आ गई है, कहीं तू उल्लू की तरह अंधेरे में जीने का आदि तो नहीं हो गया है, कहीं तेरे भीतर भेड़िया का स्वभाव तो नहीं आ गया है अत: अपना निरीक्षण कर, आत्म चिंतन कर, आत्म विश्लेषण कर, विचार कर। क्योंकि मनुष्य के पास ही बुद्धि है, सोचने समझने की ताकत है, सही गलत को समझने की शक्ति है। इसी विशेषता के कारण मनुष्य श्रेष्ठ है। अपनी इस श्रेष्ठता को बनाए रखने के लिए मनुष्य को सदैव प्रयत्न शील रहना चाहिए, पूरी विचार शीलता के साथ, पूरी बौद्धिक क्षमता के साथ आगे बढ़ने का विचार और प्रयास करना चाहिए।

वेद का दिव्य सन्देश है
उद्यानं ते पुरुष नावयानम्

अर्थात हे मनुष्य तुझे उन्नति के उच्च शिखर तक पहुंचना है, इसके लिए नित नए-नए तरीके खोजने हैं, खोजते समय अवरोध आएंगे लेकिन तुझे रुकना मना है, समस्याओं को ठोकर मार कर आगे बढ़ जाना है, तेरा लक्ष्य होना चाहिए और यही जीवन का वास्तविक उद्देश्य भी है कि आगे बढ़ो और बढ़ते रहो यह सत्य है कि इंसान के अंदर आगे बढ़ने की इच्छा बचपन से ही होती है यह आग की चिंगारी सबके अंदर है पर किसी के भीतर तो यह चिंगारी प्रज्वलित होती है और किसी की आगे बढ़ने की ऊंचा उठने की इच्छा रूपी अग्नि के ऊपर राख पड़ी होती है और आपने देखा होगा कि जलती हुई

शेष पृष्ठ न 7 पर

स्वास्थ संदेश

रक्तचाप व हृदय रोग लक्षण एवं उपचार

उच्च रक्तचाप होने पर कुछ सामान्य लक्षण जैसे- सिरदर्द, सिर भारी रहना, सिर में चक्कर आना, शरीर में थकान महसूस होना, स्वभाव चिड़चिड़ा होना, किसी काम में मन न लगना, अनिद्रा, चढ़ने में सांस फूल जाना इत्यादि। उच्च रक्तचाप का यदि समय पर उपचार न किया जाए तो हार्ट अटैक, गुर्दों का रोग, लकवा तथा आंखों के कई रोग हो जाते हैं। उच्च रक्तचाप को नियन्त्रण में लाने के लिए अधिक नमक, मिर्च-मसाले, अधिक चीनी, वसा तथा तली हुई वस्तुओं का सेवन, सिगरेट, कॉफी तथा शराब का सेवन न करें। लगातार मानसिक चिन्ता, शोक, क्रोध, मोटापा, मधुमेह का रोग, गुर्दों द्वारा अपना कार्य भली भांति न करने के कारण उच्च रक्तचाप के रोग उग्र रूप धारण कर लेते हैं

हमारे शरीर में रक्तवाहिनी धमनियों में जो रक्त प्रवाह होता है, उस प्रवाह को गति हृदय से प्राप्त होती है। जो कि दिन-रात लगातार एक अनवरत पम्पिंग मशीन की भांति रक्त को पम्प करता रहता है। हृदय द्वारा उत्पन्न दबाव से रक्त धमनियों में पहुंचता है और शरीर के विभिन्न भागों को शक्ति देकर पुन: हृदय के पास लौट आता है। इस वापिस आए रक्त को हृदय अपनी विधि द्वारा शुद्ध करके पुन: शरीर में भेज देता है। इस तरह यह रक्त के आवागमन की प्रक्रिया निरन्तर चलती रहती है। रक्त पर हृदय की पम्पिंग का जो दबाव पड़ता है उसे रक्तचाप कहते हैं।

सामान्य रक्तचाप एक स्वाभाविक क्रिया है लेकिन जब यह यह क्रिया असामान्य हो जाती है तब रोग बन जाता है। जब किन्हीं कारणों से यह दबाव बढ़ता है तो इसे उच्च रक्तचाप कहते हैं, तथा जब दबाव कम हो जाता है तब इसे न्यून रक्तचाप कहते हैं। जब हृदय अपने पास इकट्ठे हुए रक्त को शरीर में भेजने के लिए सिकुड़ता है तो उस समय जो अधिकतम दबाव बनता है उसे सिस्टोलिक रक्तचाप या प्रकुंचन चाप कहते हैं। शरीर से वापिस लौटे इसी रक्त को ग्रहण करने के लिए जब हृदय ढ़ीला होता है तो उस समय जो प्रेशर बनता है उसे डायस्टोल्कि प्रेशर या अनुशिथिलन रक्त चाप कहते हैं। इन क्रियाओं के संतुलित दबाव को रक्तचाप कहते हैं। साधरणतया बच्चों का रक्तचाप 80/50, युवकों का 120/70 तथा प्रोढ़ों का 140/90 होना सामान्य माना जाता है। इनमें पहली बड़ी संख्या सिस्टोलिक प्रेशर तथा दूसरी छोटी संख्या डायस्टोलिक प्रेशर की सूचक है।

उच्च रक्तचाप का रोग एकदम नहीं होता। यह धीरे-धीरे आता है और कई तरह की पूर्व सूचना देकर आता है। उच्च रक्तचाप होने पर कुछ सामान्य लक्षण जैसे- सिरदर्द, सिर भारी रहना, सिर में चक्कर आना, शरीर में थकान महसूस होना, स्वभाव चिड़चिड़ा होना, किसी काम में मन न लगना, अनिद्रा, चढ़ने में सांस फूल जाना इत्यादि। उच्च रक्तचाप का यदि समय पर उपचार न किया जाए तो हार्ट अटैक, गुर्दो का रोग, लकवा तथा आंखों के कई रोग हो जाते हैं। उच्च रक्तचाप को नियन्त्रण में लाने के लिए अधिक नमक, मिर्च-मसाले, अधिक चीनी, वसा तथा तली हुई वस्तुओं का सेवन, सिगरेट, कॉफी तथा शराब का सेवन न करें। लगातार मानसिक चिन्ता, शोक, क्रोध, मोटापा, मधुमेह का रोग, गुर्दो द्वारा अपना कार्य भली भांति न करने के कारण उच्च रक्तचाप के रोग उग्र रूप धारण कर लेते हैं। पोटैशियम युक्त भोजन, मलाई उतारा हुआ दूध, सादा दही तथा संतरे का जूस, टमाटर, पालक, केला प्रतिदिन लेने से उच्च रक्तचाप सामान्य हो जाता है।

निम्न रक्तचाप के कई कारण हो सकते हैं, परन्तु इसको मुख्यत: तीन भागों में विभक्त किया जाता है-

-पौष्टिक आहार की कमी के कारण, लम्बे समय तक बीमार पड़े रहने, हृदय की किसी बीमारी तथा क्षय रोग के कारण लाक्षणिक निम्न रक्तचाप हो जाता है।

- जब तक व्यक्ति बिस्तर में लेटा रहता है, उसका रक्तचाप ठीक रहता है पर ज्यों ही वह बिस्तर से उठता है तो उसे निम्न रक्तचाप हो जाता है। इसलिए इसे राइजिंग का नाम दिया जाता है। यह विशेषकर शारीरिक तौर पर कमजोर तथा पतली औरतों को होता है, उठने पर उन्हें चक्कर आने लगते है।

- पतले लम्बे व्यक्तियों जिनको भूख कम लगती है, उनके भोजन में प्रोटीन तत्व बहुत कम होते हैं, कब्ज वाले रोगियों तथा रक्तहीनता वाले रोगियों को भी यह रोग हो जाता है।

गर्मी के मौसम में अधिक पसीना आने के कारण शरीर में पानी व लवण की कमी हो जाना, दस्त के कारण शरीर में पानी व लवण तत्वों की कमी हो जाने से भी निम्न रक्तचाप हो जाता है।

उच्च रक्तचाप में लाभप्रद- छांछ पीने

शेष पृष्ठ 7 पर

स्वाधीनता के दो चमकते सितारों की जयन्ती - 2 अक्तूबर

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को शत-शत नमन

2 अक्टूबर, 1869-30 जनवरी, 1948

महात्मा गांधी जी का जन्म 2 अक्टूबर सन् 1869 को गुजरात के पोरबंदर में हिन्दू परिवार में हुआ। पिता कर्मचंद गांधी और मां पुतलीबाई द्वारा उनका नाम मोहनदास रखा गया, जिससे उनका पूरा नाम मोहनदास कर्मचंद गांधी हुआ। हालांकि यह बात कम ही लोग जानते हैं कि - **मोहन दास कर्मचंद गांधी जी को महात्मा की उपाधि अमर क्रांतिकारी स्वामी श्रद्धानंद जी ने ही दी थी, गांधी जी स्वामी श्रद्धानंद जी को बड़ा भाई कहकर संबोधित करते थे।**

महात्मा गांधी का विवाह मात्र 13 वर्ष की आयु में ही कर दिया गया था। जब वे स्कूल में पढ़ते थे, तभी पोरबंदर के एक व्यापारी की पुत्री कस्तूरबा जी से उनका विवाह हुआ और मात्र 15 वर्ष की अवस्था में गांधी जी एक पुत्र के पिता बन गए।लेकिन वह पुत्र जीवित न रह सका। इस तरह गांधी जी के कुल चार पुत्र हरिलाल, मनिलाल, रामदास और देवदास हुए। विवाह के पश्चात और स्कूल का जीवन समाप्त होने पर मुंबई के एक कॉलेज में कुछ दिन पढ़ने के बाद वे लंदन चले गए और उनकी आगे की शिक्षा दीक्षा लंदन में हुई। 3 वर्ष की शिक्षा के बाद वे बैरिस्टर बने। इसके बाद उनके जीवन की असल यात्रा शुरू हुई जो अहिंसा आंदोलन से लेकर उनके राष्ट्रपिता बनने तक, और उनके जीवन पर्यंत चलती रही...।

सन् 1914 में गांधी जी भारत लौट आए। देशवासियों ने उनका भव्य स्वागत किया। उन्होंने अगले चार वर्ष भारतीय स्थिति का अध्ययन करने तथा उन लोगों को तैयार करने में बिताए जो सत्याग्रह के द्वारा भारत में प्रचलित सामाजिक व राजनीतिक बुराइयों को हटाने में उनका साथ दे सकें। महात्मा गांधी ने भारतीय स्वतंत्रता के लिए किए जाने वाले अन्य अभियानों में सत्याग्रह और अहिंसा के विरोध जारी रखे, जैसे कि 'असहयोग आंदोलन', 'नागरिक अवज्ञा आंदोलन', 'दांडी यात्रा' तथा 'भारत छोड़ो आंदोलन'। गांधी जी के इन सारे प्रयासों से भारत को 15 अगस्त 1947 को स्वतंत्रता मिल गई।

भूतपूर्व प्रधानमन्त्री लाल बहादुर शास्त्री को शत-शत नमन

9 जून, 1964 -11 जनवरी, 1966

भारत के पूर्व प्रधानमंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री जी का जन्म 2 अक्टूबर 1904 को उत्तर प्रदेश के वाराणसी से सात मील दूर एक छोटे से रेलवे टाउन, मुगलसराय जिसका वर्तमान नाम पं. दीनदयाल उपाध्याय नगर है, वहां हुआ था। उनके पिता एक स्कूल शिक्षक थे। जब लाल बहादुर शास्त्री केवल डेढ़ वर्ष के थे तभी उनके पिता का देहांत हो गया था। उनकी माँ अपने तीनों बच्चों के साथ अपने पिता के घर जाकर बस गई। उस छोटे-से शहर में लाल बहादुर की स्कूली शिक्षा कुछ खास नहीं रही लेकिन गरीबी की मार पड़ने के बावजूद उनका बचपन पर्याप्त रूप से खुशहाल बीता। उन्हें वाराणसी में चाचा के साथ रहने के लिए भेज दिया गया था ताकि वे उच्च विद्यालय की शिक्षा प्राप्त कर सकें। घर पर सब उन्हें नन्हे के नाम से पुकारते थे। वे कई मील की दूरी नंगे पांव से ही तय कर विद्यालय जाते थे, यहाँ तक की भीषण गर्मी में जब सड़कें अत्यधिक गर्म हुआ करती थीं तब भी उन्हें ऐसे ही जाना पड़ता था।

बड़े होने के साथ-ही लाल बहादुर शास्त्री विदेशी दासता से आजादी के लिए देश के संघर्ष में अधिक रुचि रखने लगे। वे भारत में ब्रिटिश शासन का समर्थन कर रहे भारतीय राजाओं की महात्मा गांधी द्वारा की गई निंदा से अत्यंत प्रभावित हुए। लाल बहादुर शास्त्री जब केवल 11 वर्ष के थे तब से ही उन्होंने राष्ट्रीय स्तर पर कुछ करने का मन बना लिया था।

गांधी जी ने असहयोग आंदोलन में शामिल होने के लिए अपने देशवासियों से आह्वान किया था, इस समय लाल बहादुर शास्त्री केवल सोलह वर्ष के थे। उन्होंने महात्मा गांधी के इस आह्वान पर अपनी पढ़ाई छोड़ देने का निर्णय कर लिया था। उनके इस निर्णय ने उनकी मां की सारी उम्मीदें तोड़ दीं थी। उनके परिवार ने उनके इस निर्णय को गलत बताते हुए उन्हें रोकने की बहुत कोशिश की लेकिन वे इसमें असफल रहे। लाल बहादुर ने अपना मन बना लिया था। उनके सभी करीबी लोगों को यह पता था कि एक बार मन बना लेने के बाद वे अपना निर्णय कभी नहीं बदलेंगें क्योंकि बाहर से विनम्र दिखने वाले लाल बहादुर अन्दर से चट्टान की तरह दृढ़ थे।

लाल बहादुर शास्त्री ब्रिटिश शासन की अवज्ञा में स्थापित किये गए कई राष्ट्रीय संस्थानों में से एक वाराणसी के काशी विद्या पीठ में शामिल हुए। यहाँ वे महान विद्वानों एवं देश के राष्ट्रवादियों के प्रभाव में आए। विद्या पीठ द्वारा उन्हें प्रदत्त स्नातक की डिग्री का नाम 'शास्त्री' था लेकिन लोगों के दिमाग में यह उनके नाम के एक भाग के रूप में बस गया। 1927 में उनकी शादी हो गई। उनकी पत्नी ललिता देवी मिर्जापुर से थीं जो उनके अपने शहर के पास ही था। उनकी शादी सभी तरह से पारंपरिक थी। दहेज के नाम पर एक चरखा एवं हाथ से बुने हुए कुछ मीटर कपड़े थे। वे दहेज के रूप में इससे ज्यादा कुछ और नहीं चाहते थे।

1930 में महात्मा गांधी ने नमक कानून को तोड़ते हुए दांडी यात्रा की। इस प्रतीकात्मक सन्देश ने पूरे देश में एक तरह की क्रांति ला दी। लाल बहादुर शास्त्री विह्वल ऊर्जा के साथ स्वतंत्रता के इस संघर्ष में शामिल हो गए। उन्होंने कई विद्रोही अभियानों का नेतृत्व किया एवं कुल 7 वर्षों तक ब्रिटिश जेलों में रहे। आजादी के संघर्ष ने उन्हें पूर्णत: परिपक्व बना दिया।

आजादी के बाद जब कांग्रेस सत्ता में आई, उससे पहले ही राष्ट्रीय संग्राम के नेता विनीत एवं नम्र लाल बहादुर शास्त्री के महत्व को समझ चुके थे। 1946 में जब कांग्रेस सरकार का गठन हुआ तो इस 'छोटे से डायनमो' को देश के शासन में रचनात्मक भूमिका निभाने के लिए कहा गया। उन्हें अपने गृह राज्य उत्तर प्रदेश का संसदीय सचिव नियुक्त किया गया और जल्द ही वे गृह मंत्री के पद पर भी आसीन हुए। कड़ी मेहनत करने की उनकी क्षमता एवं उनकी दक्षता उत्तर प्रदेश में एक लोकोक्ति बन गई। वे 1951 में नई दिल्ली आ गए एवं केंद्रीय मंत्रिमंडल के कई विभागों का प्रभार संभाला रेल मंत्री; परिवहन एवं संचार मंत्री; वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री; गृह मंत्री एवं नेहरू जी की बीमारी के दौरान बिना विभाग के मंत्री रहे। उनकी प्रतिष्ठा लगातार बढ़ रही थी। एक रेल दुर्घटना, जिसमें कई लोग मारे गए थे, के लिए स्वयं को जिम्मेदार मानते हुए उन्होंने रेल मंत्री के पद से इस्तीफा दे दिया था। देश एवं संसद ने उनके इस अभूतपूर्व पहल को काफी सराहा। तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित नेहरू ने इस घटना पर संसद में बोलते हुए लाल बहादुर शास्त्री की ईमानदारी एवं उच्च आदर्शों की काफी प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि उन्होंने लाल बहादुर शास्त्री का इस्तीफा इसलिए नहीं स्वीकार किया है कि जो कुछ हुआ वे इसके लिए जिम्मेदार हैं बल्कि इसलिए स्वीकार किया है क्योंकि इससे संवैधानिक मर्यादा में एक मिसाल कायम होगी। रेल दुर्घटना पर लंबी बहस का जवाब देते हुए लाल बहादुर शास्त्री ने कहा; "शायद मेरे लंबाई में छोटे होने एवं नम्र होने के कारण लोगों को लगता है कि मैं बहुत दृढ नहीं हो पा रहा हूँ। यद्यपि शारीरिक रूप से मैं मजबूत नहीं हूं लेकिन मुझे लगता है कि मैं आंतरिक रूप से इतना कमजोर भी नहीं हूँ।" अपने मंत्रालय के कामकाज के दौरान भी वे कांग्रेस पार्टी से संबंधित मामलों को देखते रहे एवं उसमें अपना भरपूर योगदान दिया।

1952, 1957 एवं 1962 के आम चुनावों में पार्टी की निर्णायक एवं जबर्दस्त सफलता में उनकी सांगठनिक प्रतिभा एवं चीजों को नजदीक से परखने की उनकी अद्भुत क्षमता का बड़ा योगदान था। तीस से अधिक वर्षों तक अपनी समर्पित सेवा के दौरान लाल बहादुर शास्त्री अपनी उदात्त निष्ठा एवं क्षमता के लिए लोगों के बीच प्रसिद्ध हो गए। विनम्र, दृढ, सहिष्णु एवं जबर्दस्त आंतरिक शक्ति वाले शास्त्री जी लोगों के बीच ऐसे व्यक्ति बनकर उभरे जिन्होंने लोगों की भावनाओं को समझा। वे दूरदर्शी थे जो देश को प्रगति के मार्ग पर लेकर आये। लाल बहादुर शास्त्री महात्मा गांधी के राजनीतिक शिक्षाओं से अत्यंत प्रभावित थे। अपने गुरु महात्मा गाँधी के ही लहजे में एक बार उन्होंने कहा था "मेहनत प्रार्थना करने के समान है।" महात्मा गांधी के समान विचार रखने वाले लाल बहादुर शास्त्री भारतीय संस्कृति की श्रेष्ठ पहचान हैं।

NDA/TES में गुरुकुल कुरुक्षेत्र के छात्रों ने स्थापित किया कीर्तिमान

इस वर्ष गुरुकुल के 17 छात्र एन.डी.ए और टी.ई.एस. के लिए हुए सेलेक्ट

गुरुकुल कुरुक्षेत्र के ब्रह्मचारियों ने पुराने सभी रिकॉर्ड को तोड़ते हुए इस वर्ष एन.डी.ए./टी.ई.एस. में 17 रिकमंडेशन लेकर कामयाबी की नई मिसाल कायम की है। पिछले वर्ष की बात करें तो गुरुकुल के 14 छात्रों का चयन एन.डी.ए./टी.ई.एस. में हुआ था जो अब भारतीय सेनाओं में उच्च अधिकारी पद की ट्रेनिंग ले रहे हैं। छात्रों की शानदार सफलता पर पूरे गुरुकुल में उत्साह का वातावरण है। महामहिम राज्यपाल आचार्य श्री देवव्रत जी ने इसके लिए छात्रों को शुभकामनाएं एवं निदेशक ब्रिगेडियर डॉ. प्रवीण कुमार, प्राचार्य सूबे प्रताप, मुख्य संरक्षक संजीव आर्य, एनडीए विंग के सूबेदार बलवान सिंह, अशोक कुमार चौहान इंस्ट्रक्टर कोर्डिनेटर को विशेष बधाई दी।

ब्रिगेडियर डॉ. प्रवीण कुमार ने बताया कि इस वर्ष गुरुकुल के दीपान्शु, आर्यन, कार्तिक, मुकुलजीत, कुमार आदित्य, गोल्डी, ऋषभराज, अभिनन्दन, यश बुकर,

दीपक तेवतिया, मौसम, सन्नी रावल, आर्य प्रताप का चयन एन.डी.ए में हुआ है जबकि अरुण कुमार, प्रवेश कुमार, गौरव, विश्वदीप का चयन टी.ई.एस. में हुआ है। इनमें से अधिकांश छात्र जुलाई 2024 में एन.डी.ए./टी.ई.एस. के प्रशिक्षण हेतु एन.डी.ए. खडगवासला, पुणे व दूसरे संस्थानों में जा चुके हैं।

निदेशक प्रवीण कुमार ने बताया कि महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी ने देश की सेनाओं को कर्मनिष्ठ, ईमानदार और देशभक्ति के जज्बे से परिपूर्ण उच्च अधिकारी देने का जो सपना संजोया था, वह अब पूरा हो रहा है। गुरुकुल कुरुक्षेत्र से प्रतिवर्ष बड़ी संख्या में एनडीए के माध्यम से छात्र भारतीय सेनाओं में जा रहे हैं। वर्ष 2016 से शुरु हुआ यह सिलसिला निरन्तर जारी है और अब तक गुरुकुल के 61 छात्र भारतीय सेनाओं में चयनित हो चुके हैं। केवल भारतीय सेना ही नहीं अपितु मेडिकल, इंजीनियरिंग में भी गुरुकुल के छात्र पीछे नहीं है, एनआईटी, आईआईटी, नीट में भी गुरुकुल के 105 से अधिक छात्रों का चयन हुआ है। कुल मिलाकर गुरुकुल कुरुक्षेत्र छात्रों के उज्ज्वल भविष्य की गारंटी का एक प्रमुख संस्थान बनकर उभरा है और अभिभावकों के इस भरोसे को भविष्य में भी गुरुकुल प्रबंधन इसी प्रकार कायम रखेगा।

उत्कृष्ट परिणामों के लिए सभी विद्यार्थियों, गुरुकुल प्रशासन, शिक्षकों एवं सम्बन्धित कार्यकर्ताओं को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से बधाई एवं शुभकामनाएं।

प्रथम पृष्ठ का शेष

कर्मचारियों को महर्षि दयानन्द प्रतियोगिता कॉमिक वितरण कार्यक्रम का शुभारम्भ

उनके ज्ञान पर आधारित है। कॉमिक बुक्स को देश भर में 70 से अधिक इकाइयों/कारखानों में कार्यरत 35000 ऑन-रोल, संविदा और गैर-संविदा कर्मचारियों के बीच वितरित किया जाएगा। सभी कर्मचारियों को अपने संबंधित एचआर पीए से संपर्क कर प्लांट से कॉमिक प्राप्त करने की सलाह दी गई है।

माननीय अध्यक्ष श्री एस.के. आर्य जी ने महर्षि दयानंद के योगदान को एक दूरदर्शी नेता, समाज सुधारक और सत्य, समानता एवं शिक्षा के पक्षधर के रूप में सम्मानित किया।

महर्षि दयानंद सरस्वती, जो भारत के इतिहास में एक प्रमुख व्यक्तित्व थे, ने अपने जीवन को समाज के उत्थान के लिए समर्पित किया। उनकी शिक्षाएं आत्मनिर्भरता, सामाजिक सुधार और समानता पर आधारित थी और उन्होंने पीढ़ियों पर गहरा प्रभाव डाला है। उन्होंने समाज से शिक्षा को केवल ज्ञान प्राप्ति के साधन के रूप में नहीं बल्कि चरित्र निर्माण और सामाजिक उत्तरदायित्व की नींव के रूप में अपनाने का आह्वान किया।

इस अवसर पर बोलते हुए, अध्यक्ष श्री एस.के. आर्य ने कहा, "जेबीएम ग्रुप में हम महर्षि दयानंद सरस्वती द्वारा समर्थित मूल्यों से गहराई से जुड़ते हैं। उनकी दृष्टि के अनुरूप, हम 'महर्षि दयानंद सरस्वती' कॉमिक बुक्स का वितरण सभी कर्मचारियों और उनके परिवारों में कर रहे हैं। इस पहल का उद्देश्य उनकी अमर शिक्षाओं को एक रोचक और सुलभ तरीके से फैलाना है, खासकर हमारे बच्चों के लिए।"

ये कॉमिक बुक्स महर्षि दयानंद की शिक्षाओं को नए पीढ़ी के बीच में रचनात्मक रूप से प्रस्तुत करने का एक शानदार तरीका हैं, जिससे उन्हें उनके दर्शन और जीवन के पाठों के बारे में जानकारी मिलेगी। इसके अलावा, परिवारों और बच्चों को और अधिक संलग्न करने के लिए एक कॉमिक बुक प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया है। प्रतिभागी महर्षि दयानंद की शिक्षाओं से संबंधित प्रश्नों का उत्तर देकर रोमांचक पुरस्कार जीत सकते हैं, जो चिंतन और सीखने को बढ़ावा देगा।

यह पहल न केवल पारिवारिक बंधन को साझा शिक्षा के माध्यम से प्रोत्साहित करती है, बल्कि व्यक्तिगत और सामाजिक विकास को बढ़ावा देने वाले मूल्यों को भी मजबूत करती है। अध्यक्ष श्री एस.के. आर्य ने यह भी जोड़ा, "इन कहानियों को पढ़कर हम आशा करते हैं कि हमारे बच्चे उन मूल्यों की नींव तैयार करेंगे, जो जीवनभर उनका मार्गदर्शन करेंगे और जिम्मेदार एवं जागरूक नागरिकों का निर्माण करेंगे।"

आर्य प्रतिनिधि सभा महाराष्ट्र का निर्वाचन सम्पन्न

श्री स्वामी विद्यानन्द (विज्ञानमुनि जी) - प्रधान
प्रा. श्री अर्जुनराव सोमवंशी जी - मन्त्री निर्वाचित

रविवार दिनांक 14 जुलाई 2024 को श्रद्धानंद गुरुकुल आश्रम परली में महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का पंचवार्षिक निर्वाचन सर्वसम्मति से संपन्न हुआ। निर्वाचन अधिकारी वैदिक विद्वान पं. प्रियदत्तजी शास्त्री (हैदराबाद) की अध्यक्षता तथा स्वामी श्रद्धानंद जी सरस्वती, डॉ. ब्रह्ममुनि जी, स्वामी सोमानंदजी महाराज के सान्निध्य में निम्नांकित पदाधिकारी निर्वाचित हुए-

प्रधान- स्वामी विद्यानंद (विज्ञानमुनि जी)
का. प्रधान - श्री लखमसीभाई वेलानी
उपप्रधान - सर्वश्री राजेंद्र दिवे, दयाराम बसैये, प्रमोद कुमार तिवारी एवं श्री ओमप्रकाश पाराशर।
मंत्री- प्रा. श्री अर्जुनरावजी सोमवंशी
उपमंत्री-सर्वश्री शंकरराव बिराजदार, विजयकुमार कानडे, श्रीमती गंगाबा मारमपल्ले, शंकरराव मोरे।
कोषाध्यक्ष - श्री रंगनाथ तिवारी।

इसके अतिरिक्त 21 अंतरंग सदस्यों' का भी चयन/निर्वाचन किया गया।

स्वामी विद्यानंद
प्रधान

लखमसीभाई वेलानी
कार्य.प्रधान

अर्जुनराव सोमवंशी
मन्त्री

रंगनाथ तिवारी
कोषाध्यक्ष

सार्वदेशिक सभा एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से नव निर्वाचित अधिकारियों एवं अन्तरंग सदस्यों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती पर
दस लाख रुपये की पुरस्कार प्रतियोगिता
कॉमिक्स पढ़ें और जीतें लाखों के ईनाम

1 पुरस्कार : 1 लाख, 2 पुरस्कार : 51 हजार, 3 पुरस्कार : 31 हजार,
4 पुरस्कार : 51 सौ, पुरस्कार : 2100 नकद, छठा पुरस्कार : 1000 नकद,
सातवां पुरस्कार : 500/- रुपये नकद

प्रथम एवं द्वितीय पुरस्कार विजेता के विद्यालय/संस्था को विशेष पुरस्कार

सर्वाधिक प्रतियोगिता सहभागी वाले विद्यालय/संस्था को विशेष पुरस्कार

साप्ताहिक स्वाध्याय

नियमों की दृढ़ नींव

गतांक से आगे-

आर्यसमाज के नियमों का दूसरा संस्करण करने का क्या निमित्त था, यह एक आवश्यक प्रश्न है। महर्षि दयानन्द ने बम्बई के नियमों में परिवर्तन की आवश्यकता समझी- यह बिना निमित्त के नहीं हो सकता। परिवर्तन की आवश्यकता का प्रथम प्रयोजन यह प्रतीत होता है कि नियमों को कुछ अधिक स्पष्ट कर दिया जाय। बम्बई के नियमों में न जाने क्या-क्या मिला हुआ था-आर्यसमाज का उद्देश्य, सभासदों की योग्यता, समाज का संगठन, अधिवेशनों की कार्यवाही, समाचारपत्रों का निकालना आदि गौण और मुख्य, व्यापक और स्थानीय, सभी प्रकार की बातें मिलाकर धर दी गई थीं। आवश्यक था कि मुख्य को गौण से तथा व्यापक को स्थानीय से जुदा कर दिया जाय। लाहौर के दस नियमों में केवल उन्हीं बातों के समावेश का यत्न किया गया, जो मुख्य और व्यापक हैं। बम्बई के नियमों का 19वां नियम कहता है कि इस समाज की ओर से श्रेष्ठ विद्वान् लोग सर्वत्र सदुपदेश करने के लिए भेजे जावेंगे- यह एक गौण नियम है। यह प्रत्येक समाज की शक्ति पर अवलम्बित है कि वह प्रचार के लिए उपदेशकों को बाहर भेज सकता है या नहीं। हरेक समाज के लिए यह नियम नहीं बन सकता कि वह उपदेशक रखकर प्रचार करावे। इस प्रकार के नियम लाहौर में स्वीकृत नियमों में से निकाल दिये गए।

लाहौर में स्वीकृत नियम व्यापक हैं। उनमें विचारों की अधिक उदारता पाई जाती है। उनके निर्माता का दृष्टि-क्षेत्र विस्तृत हो गया है। बम्बई वाले नियम बम्बई के उस समय के सामान्य विचारों के प्रतिबिम्ब थे; लाहौर वाले नियम हृदय तथा प्रतिभा के विकास को सूचित करते हैं। बम्बई वाले नियमों में ईश्वर के स्वरूप का प्रतिपादन नहीं, लाहौर वाले नियम वस्तुतः ईश्वर-विश्वास को ही सब विश्वासों का आधार मानकर चले हैं। उनमें आर्यसमाज का भवन ईश्वर-विश्वास की मजबूत नींव पर रखा गया है। लाहौर के संस्कृत परिष्कृत नियम सिद्ध करते हैं कि महर्षि दयानन्द अन्य सब विश्वासों की अपेक्षा ईश्वर-विश्वास को अधिक आवश्यक समझते थे। बहुत-सी बुराइयों की जड़ वह ईश्वर-सम्बन्धी उल्टे विचारों को ही मानते थे। उन्होंने अपने जीवन का एक विशेष उद्देश्य यह बना रखा था कि लोगों के ईश्वर-सम्बन्धी विचारों का सुधार किया जाय। बम्बई में बने नियमों में यह अच्छी तरह नहीं सूचित होती थी, लाहौर में यह त्रुटि पूरी कर दी गई। उद्देश्य पर ध्यान दें, तो भी व्यापकता की वृद्धि पाई जाती है। छठा नियम है, संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना। उद्देश्यों में से स्थानीयता निकल गई है। महर्षि का दृष्टि क्षेत्र विस्तृत हो गया है। वह आर्य जाति का सुधार इसलिए नहीं करना चाहता कि वह केवल आर्य जाति की भलाई चाहता है; वह आर्य जाति को सुधारकर संसार के उपकार का साधन बनाना चाहता है।

तीसरा भेद, जिसकी ओर ध्यान देना आवश्यक है, यह है कि ईश्वरीय ज्ञान की व्याख्या अधिक विस्तृत और उदार हो गई है। पहला नियम बताता है कि सब सत्य विद्या और जो पदार्थ सत्य विद्या से जाने जाते हैं, उन सबका आदि मूल परमेश्वर है- कितनी उदार और संकोचहीन व्याख्या है! ईश्वर के ज्ञान की सीमाएं नहीं बांधी गई। सर्वज्ञ और असीम भगवान् के ज्ञान के चारों ओर रेखा खेंची भी नहीं जा सकती। सब सत्य विद्या का आदि मूल परमेश्वर है- विद्या-रूपी वृक्ष का तना है, शाखाएं हैं, पत्ते, फूल और फल सब हैं; परमात्मा उनका आदि-मूल है। आदि-मूल तभी हो सकता है, जब वृक्ष की सम्भावना मान ली जाय। इस प्रकार अपरिमित ज्ञान रूपी कल्पवृक्ष का मूल परमात्मा को माना गया है। परमात्मा का ज्ञान भी अपरिमित का मूल अपरिमित ही हो सकता है। जो मतवादी ईश्वर के असीम ज्ञान भण्डार को एक, दो या अधिक कमरों में बन्द समझना चाहते हैं, उन्हें महर्षि दयानन्द के उदार विचार पर ध्यान देना चाहिए। पहला नियम अनुदारता की जड़ पर कुठाराघात करता है। वह पन्थाईपन का कट्टर शत्रु है। वह

उन लोगों के दावे को छिन्न-भिन्न कर देता है, जो ईश्वरीय ज्ञान के ठेकेदार बनना चाहते हैं। कई महानुभावों का यह दावा है कि महर्षि जी को उन्होंने नियम परिवर्तन में प्रेरित किया और जो भेद दिखाई देता है वह उन्हीं की उदारता का फल है। प्रेरणा किसी ओर से हो, इसमें सन्देह नहीं कि जो भी परिवर्तन किया गया वह महर्षि जी की अनुमति से किया गया। यदि उन नियमों में अधिक उदारता है तो महर्षि दयानन्द के विचारों की उदारता ही उसमें कारण है।

-क्रमशः

पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति जी द्वारा लिखित एवं 200 वीं जयन्ती पर पुनः प्रकाशित जीवनी महर्षि दयानन्द से साभार पुस्तक प्राप्ति के लिए ऑन लाइन
www.vedicprakashan.com
अथवा 9540040339 पर आर्डर करें।

Continue From Last Issue

Solid foundation of rules

What was the purpose of making the second edition of the rules of Aryasamaj. This is an essential question. Rishi Dayanand understood the need for change in the rules of Bombay, This cannot happen without reason. The first purpose of the need for change seems to be to make the rules a bit more clear. Don't know what was mixed in the rules of Bombay-the purpose of Arya Samaj, the qualification of the members, the organization of the society, the proceedings of the conventions, the publication of newspapers etc. secondary and main, comprehensive and local, all kinds of things were mixed together. It was necessary to separate the main from the minor and the widespread from the local. In the ten rules of Lahore, an attempt was made to include only those things, which are main and comprehensive. The 19th rule of the Bombay Rules states that 'The best learned men shall be sent from this society to preach everywhere' - this is a secondary rule. It is up to the power of each society whether it can send preachers out for preaching or not. It cannot be a rule for every society that it should appoint a preacher for preaching. These types of rules were removed from the accepted rules in Lahore.

The rules accepted in Lahore are comprehensive. More generosity of thoughts is found in them. The field of view of their creator has expanded. The Bombay rules were a reflection of the general ideas of the time in Bombay; the Lahore rules indicate the development of heart and talent. There is no presentation of the form of God in the Bombay rules, the Lahore rules have in fact considered faith in god as the basis of all beliefs. In them the edifice of Arya Samaj has been built on the strong foundation of faith in God. The Sanskrit rules of Lahore prove that Rishi Dayanand considered God-faith in God more important than all other faiths. The root of many evils he believed to be wrong ideas related to God. He had made a special aim of his life to reform the ideas related to God of the people. This was not well informed in the rules made in Bombay, this error was made good in Lahore. Focusing on the objective, even then, an increase in generality is found. The sixth rule is, 'The main objective of this society is to do good to the world, that is, to make physical, spiritual and social progress.' Locality has gone out of the objectives - the field of vision of the sage has expanded. He does not want to reform the Aryan race because he only wants the welfare of the Aryan race; he wants to reform the Aryan race and make it a means of benefiting the world.

A third distinction to note is that the interpretation of theology has become more expansive and liberal. The first law states that the Supreme Lord is the original source of all the knowledge of truth and the objects known by the knowledge of truth – what a generous and unabashed explanation! The boundaries of the knowledge of God were not set. Not even a line can be drawn around the knowledge of the omniscient and infinite God. The Supreme Lord is the original source of knowledge of all truth. The tree of knowledge has its trunk, branches, leaves, flowers and fruits. The Supreme Soul is its original source. Adi-Mula can happen only when the possibility of a tree is accepted. In this way, the origin of Kalpavriksha in the form of infinite knowledge is considered to be the Supreme Soul. The knowledge of God can also be the root of the infinite.

To be Continue.....

With courtesy by the biography of "Maharshi Dayanand" re-published on the occasion of 200th birth anniversary and written by Pt. Indra Vidyavachaspati Ji. To buy online login WWW.vedicprakshan.com or contact - 9540040339

पृष्ठ 3 का शेष ऊपर उठो, आगे बढ़ो ....

आग से तो शेर भी डर जाता है लेकिन रात को तो चीटियां निरंतर आगे बढ़ जाती है इसलिए अपनी इच्छाओं आकांक्षाओं को राख मत बनने देना, आगे बढ़ना, ऊंचा उठना मनुष्य का लक्ष्य और उद्देश्य होना चाहिए। अपने लक्ष्य और उद्देश्य को पूरा किए बिना मंजिल को पाएं बिना कभी नहीं रुकना चाहिए बहुत बार ऐसा भी देखने में आता है कि जो बच्चे बार-बार असफल होते हैं तो उनको देखकर लोग ताने देने लगते हैं, उनकी निंदा करते हैं लेकिन उसी विपरीत वातावरण को अगर अनुकूल बना कर उसी अपमान से प्रेरणा लेकर अगर कोई आगे बढ़ने लगता है तो फिर उसकी उन्नति प्रगति और सफलता को कोई रोक नहीं सकता, बस जरूरत है कि हमें अपने स्वरूप को पहचानना होगा, हम परमपिता परमात्मा की अमृत संतान हैं, हमें उसके द्वारा प्रदान किए हुए वैदिक ज्ञान के द्वारा अपने विचारों को अपनी बुद्धि को प्रखर रखना होगा, सावधान रहना होगा, बार-बार विचार करना होगा कि कहीं हम अपने लक्ष्य और उद्देश्य से भटक न जाए, हमारे जीवन का उद्देश्य बड़ा होना चाहिए। हमारी सोच बड़ी होनी चाहिए हमारे कार्य भी बड़े होने चाहिए, हमें किसी भी हाल में किसी भी स्थिति में अपने आप को सिमीत नहीं करना चाहिए। क्योंकि वेद का संदेश है हमें ऊंचा उठना है, हमें आगे बढ़ना है यह एक ऐसा मंत्र है जिसका मनन करने से मनुष्य को शक्ति प्राप्त होती है विचारों में नवीनता आती है, जागृति आती है, इसलिए वेद के आदेशानुसार आगे बढ़े और बढ़ते रहें।

-संपादक

पृष्ठ 2 का शेष श्रद्धा वालकर के बाद अब महालक्ष्मी ....

अलग एक सिर, महालक्ष्मी का सिर, और फ्रिज से लेकर फर्श तक पर बिखरे लाशों के टुकड़ों को समेटा गया। इसी समेटने के दौरान ये अंदाजा हुआ कि लाश के टुकड़ों की संख्या चालीस-पचास के आस-पास है।

महालक्ष्मी के जिस्म के टुकड़े समेटने के बाद अब पुलिस ने कमरे की तलाशी ली। तलाशी के दौरान महालक्ष्मी के बेड पर रखा एक मोबाइल मिला। कॉल डिटेल रिकॉर्ड को चेक किया गया, तो पता चला कि इस फोन से आखिरी कॉल 2 सितंबर को किया गया था। दो सितंबर के बाद से ना तो इस फोन से कोई कॉल किया गया और ना ही को रिसीव किया गया। पुलिस की जांच आरंभ होती है। अब यहाँ से असरफ के रोल का भी पता चलता है, जिस पर महालक्ष्मी के टुकड़े करने का शक हुआ। दरअसल, महालक्ष्मी का परिवार साल 2019 तक नेपाल में ही रहा करता था। 2019 में ही महालक्ष्मी की हेमंत दास नाम के एक नेपाली लड़के से शादी हुई। शादी के बाद दोनों रोजगार और बेहतर जिंदगी की उम्मीद लिए नेपाल से बेंगलुरु पहुंचते हैं। बेंगलुरु में हेमंत एक मोबाइल शॉप पर काम करने लगा, जबकि महालक्ष्मी को एक नामचीन मॉल के ब्यूटी शॉप में बतौर सेल्स वूमेन टीम लीडर की नौकरी मिल गई । दोनों बेंगलुरु के ही नीला मंगला इलाके में किराए के घर में रहने लगे। बाद में दोनों को एक बेटी हुई। 2023 तक सब कुछ ठीक था। लेकिन 2023 में हेमंत और महालक्ष्मी अलग हो गए। महालक्ष्मी ने बेटी को भी पति के पास छोड़ दिया और अकेली रहने लगी। हेमंत और महालक्ष्मी के बीच की इस दूरी की वजह बना उत्तराखंड के रहने वाले एक हेयर ड्रेसर अशरफ। इसी बात को लेकर हेमंत और महालक्ष्मी के बीच काफी झगड़ा होता और इसी झगड़े की वजह से महालक्ष्मी कुछ महीने मां और छोटी बहन के साथ रही और फिर पांच महीने पहले किराए के इस घर में आ गई जहाँ उसका जिस्म टुकड़ों में मिला।

हालाँकि पुलिस ने अभी कोई नाम ओपन नहीं किया, शक के आधार पर अशरफ को पकड़ लिया है। हेमंत दास ने दावा किया कि उनकी पत्नी अशरफ नाम के शख्स के साथ अवैध संबंध में थी। इसकी वजह ब्लैकमेलिंग का केस हो सकता है, क्योंकि कुछ महीने पहले ही महालक्ष्मी ने अशरफ के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज करायी थी।

दूसरा, जिस तरह से लाश के टुकड़े किए गए हैं, उसे देखकर भी पुलिस को अंदाजा है कि ये जल्दबाजी में नहीं हुआ है। यानी कातिल ने घर के अंदर तसल्ली से लाश के टुकड़े किए। यानी क़त्ल के बाद भी वो कई घंटे या बहुत मुमकिन है पूरी रात उसी घर में रहा। हालांकि हैरानी इस बात पर है कि किसी ने उसे जाते नहीं देखा। जिस घर में महालक्ष्मी रहती थी, उस बिल्डिंग के आस-पास की तमाम सीसीटीवी फुटेज को पुलिस खंगाल रही है। पुलिस को उम्मीद है कि वारदात की टाइमिंग को देखते हुए किसी न किसी कैमरे में वो अजनबी जरूर कैद हुआ होगा।

श्रद्धा केस ने पहली बार लाश के टुकड़े कर उसे फ्रिज में रखने या छुपाने का आइडिया आफताब ने दिया था। ठीक उसी तरह महालक्ष्मी की लाश के साथ भी किया गया। विडंबना यह है कि इतनी खबर आने के बाद भी कोई महालक्ष्मी या श्रद्धा अभी भी समझने को तैयार नहीं है। - **संपादक**

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश-2
एम ब्लाक, नई दिल्ली-110048

प्रधान : श्री सहदेव नांगिया
मन्त्री : श्री एस. के. कोहली
कोषाध्यक्ष : श्री प्रियव्रत

पृष्ठ 3 का शेष रक्तचाप व हृदय रोग लक्षण .....

से लाभ पहुंचता है, तुरन्त लाभ के लिए आधा कप पानी में आधा नींबू निचोड़कर दिन में दो-तीन बार दो-दो घण्टे के अन्तराल में पीने से तुरन्त लाभ होता है।

निम्न रक्तचाप में लाभप्रद- एक कप पानी में किशमिश भिगो दें। 12 घण्टे भीगने के बाद प्रात:काल एक-एक मिशमिश को खूब चबा-चबाकर खाने से निम्न रक्तचाप में बहुत लाभ होता है। एक माह तक लगातार सेवन करने से पूर्णलाभ प्राप्त होता है।

हृदय रोग- हृदय रोग आज तेजी से फैलता जा रहा है। खाने-पाने की स्वच्छन्दता, भौतिकवाद की होड़ में तरह-तरह के मांसाहरी एवं गरिष्ठ पदार्थो के प्रति आकर्षण, शारीरिक श्रम की शून्यता, मानसिक तनाव आदि हृदय-रोग की वृद्धि के कारण हैं।

हृदय की शिराएं जब अवरुद्ध हो जाती हैं तो हृदयघात की सम्भावना बन जाती हैं। अधिक चिकनाई युक्त वसायुक्त भोजन खून में थक्के जमाता है तथा उसी का कुपरिणाम शिराएं अवरुद्ध होने के रूप में सामने आता है। आधुनिक विज्ञान ने हृदय रोग के निदान के लिए बाईपास सर्जरी, पेसमेकर- जैसी अनेक अत्यन्त खर्चीली सुविधाएं ईजाद की हैं, किंतु इनका उपयोग साधरण रोगी नहीं कर सकता है और यह भी तथ्य सामने आऐ हैं कि ऑपरेशन करने वाले को जीवन भर अनेक अन्य बीमारियों का सामना भी करना पड़ता है।

घीया (लौकी) हृदय रोग में रामबाण औषधि सिद्ध हुआ है। अनेक हृदय रोगियों ने इसका उपयोग किया और रोग से छुटकारा पाया है हृदय रोगियों के लिए इस अनुभूत प्रयोग की विधि इस प्रकार है-

घीया को छिलके सहित धोकर घीयाकश में कस लें। कसी हुई घीया को सिलबट्टे पर पीस लें। ग्राइंडर में डालकर भी उसका रस निकाला जा सकता है। घीया को पीसते समय पोदीना के 5-6 पत्ते तथा तुलसी के 8 पत्ते उसमें डाल दें। फिर पिसे हुए घीया को कपड़े से छान करके उसका रस निकाल लें। उस रस की मात्रा 125-150 ग्राम होनी चाहिए। इसमें इतना ही स्वच्छ जल मिलाएं। अब यह 250 से 300 ग्राम रस हो जाएगा। इस रस में चार काली मिर्च का चूर्ण तथा एक ग्राम सेंधा नमक मिला लें। अब इस रस को भोजन करने के आधा या पौन घंटे के पश्चात सुबह-दोपहर एवं रात्रि में तीन बार लें। प्रारम्भ में 3-4 दिन तक रस की मात्रा कम भी ली जा सकती है। रस हर बार ताजा लेना चाहिए। प्रारम्भ में यदि पेट कुछ गड़बड़ महसूस हो तो चिन्तित न हो। घीया का यह रस पेट में पल रहे विकारों को भी दूर कर देता है। तीन बार औषधि लेने में कठिनाई हो तो आधा-आधा किलो घीया इसी प्रकार सुबह-शाम लिया जा सकता है। घीया पहले पांच दिन तक लगातार लेना होगा, फिर 25 दिन का अन्तराल देकर, पांच दिन तक लगातार लें। इस प्रकार कम-से-कम तीन महीने तक लेना होगा। उपचार के दौरान कोई भी खट्टी वस्तु न लें। न तो खट्टे फल, न टमाटर, न नींबू। हृदय रोगियों को मांस, मदिरा, धूम्रपान आदि का पूरी तरह त्याग करना आवश्यक है। चार-पांच किलोमीटर टहलना भी जरूरी है।

शोक समाचार

श्रीमती तृप्ता शर्मा जी को पतिशोक

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ईकाई आर्य विद्या परिषद् की सदस्या एवं रतनचन्द आर्य पब्लिक स्कूल विनय नगर सरोजनी नगर की प्रबन्धक श्रीमती तृप्ता शर्मा जी के पतिदेव श्री पुरुषोत्तम कुमार शर्मा जी का आकस्मिक निधन हो गया। अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ सम्पन्न हुआ। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 21 सितम्बर, 2024 को शिव धर्मशाला, गिरी नगर में सम्पन्न हुई, जिसमें महामन्त्री श्री विनय आर्य सहित निजी परिवाजनों एवं निकटवर्ती अनेक आर्यसमाजों के पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

श्री देशबन्धु मदान जी को मातृशोक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान श्री देशबन्धु मदान जी की पूज्यामाता श्रीमती कौशल्या देवी जी (धर्मपत्नी स्व. श्री लक्ष्मणदास आर्य जी) का लगभग 91 वर्ष की आयु दिनांक 24 सितम्बर, 2024 को आकस्मिक निधन हो गया। अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ सम्पन्न हुआ। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 27 सितम्बर, 2024 को पुष्प वाटिका सै. 10, फरीदाबाद में सम्पन्न हुई, जिसमें दिल्ली सभा एवं हरियाणा सभा के अधिकारियों के साथ निकटवर्ती अनेक आर्यसमाजों के सदस्यों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त बपरिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 23 सितम्बर, 2024 से रविवार 29 सितम्बर, 2024

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं. डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2024-25-2026

LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 26-27-28/09/2024 (वीर-शुक्र-शनिवार)

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2024-25-26

आर.एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 25, सितम्बर, 2024

प्रतिष्ठा में,

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्प्लेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह